बेशर्ममेव जयते

प्रेम जनमेजय

बेशर्ममेव जयते

प्रेम जनमेजय

क्रम

बेशर्ममेव जयते	5
चुनाव का आंखों देखा हाल	9
इन्द्रधनुष का जादू	13
अथ स्टडी-लीव प्रकरण	17
चिपको आन्दोलन, सावधान!	24
मक्खियां	28
चरण-चिह्नों पर	31
मैं संयोजक बन गया हूं	34
शिक्षा खरीदो : शिक्षा बेचो	39
गलियां और भीड़	43
एक गांव की...	51
बीच का मौसम	59
आह! आया महीना मार्च का	62
आया रंगीन टी.वी.	65
बस-स्टॉप की भीड़	68
अथ परीक्षक-वृत्तान्त	73
भेड़ाघाट, चांदनी रात और कवि-मित्र	78
बलात्कार के पहलू	81
हमें मत छेड़ो, हम रिसर्च कर रहे हैं	84

एक अबाढ़-पीड़ित की व्यथा 87

लिफ्ट की तलाश में 90

बेशर्ममेव जयते

कुछ आदमी प्राय: आदमी न होकर मोमजामे हो जाते हैं। इनको नेता कहते हैं। कुछ इससे भी आगे बढ़ जाते हैं। इन पर धूप, हवा, पानी, आग, सत्य, न्याय, नैतिकता, ईमानदारी, करुणा, दया-किसी का भी असर नहीं पड़ता है। ये अपने लिए जीते हैं और दूसरों को विवश करते हैं कि वे भी इनके लिए जियें। ऐसे लोगों से खुदा भी डरता है। ये कपड़े उतारने में बहुत सहूलियत महसूस करते हैं। कपड़े ये अपने ही उतारते हैं और शर्म दूसरों को आ जाती है। ऐसे सम्माननीय सज्जनों को 'बेशर्म' कहते हैं।

बेशर्मों से इतिहास भरा हुआ है और यह इतिहास प्रसिद्ध है कि ऐसे लोगों को कभी शर्म नहीं आती। शहाबुद्दीन गौरी को पृथ्वीराज चौहान ने सत्रह बार शर्मिन्दा करने का प्रयास किया परंतु वह एक बार भी नहीं हुआ। बेशर्म होकर निरंतर अपने कपड़े उतारता रहा। पृथ्वीराज चौहान अपनी इस राजपूती शान पर माथा ऊंचा किये भटकते रहे कि उन्होंने गौरी को कई बार लज्जित किया है। अठाहरवीं बार शहाबुद्दीन गौरी विजयी हुआ परंतु उसने पृथ्वीराज को शर्मिन्दा होने का एक बार भी अवसर नहीं दिया। पृथ्वीराज राजपूती शान में अपना सिर गंवा बैठे और गौरी ने बेशर्मी से सोने की चिड़िया के पंख नोचे और अपनी राह पर चल दिया।

शर्मदार लोग बेशर्मों से निरंतर पराजित होते रहे हैं। जो जितना बड़ा बेशर्म बना, उसने उतनी ही बड़ी विजय हासिल की।

बेचारा दुर्योधन शर्म में मारा गया। गांधारी के सामने बेशर्म नहीं हो सका। बेशर्म हो जाता तो भीम से पराजित न होता, इतिहास बदल जाता। और दूसरी ओर पांडव महाभारत के युद्ध में निरंतर अपने कपड़े उतारते रहे। भीष्म पितामह के पास जाकर उनसे उनकी मृत्यु का रहस्य पूछ आये। द्रोणाचार्य को असत्य बोलकर शर्मिन्दा किया और स्वयं बेशर्मी से उनकी हत्या कर दी। कर्ण की बेशर्मी से हत्या की और स्वयं विजयी-भाव से मुसकराये। पांडवजन युद्ध में कई बार बेशर्म हुए पर दुर्योधन एक बार भी नहीं हो सका। धर्म-युद्ध को धर्म-युद्ध की तरह लड़ता रहा।

उस दिन बस-स्टाप पर एक युवक लड़की से छेड़छाड़ कर रहा था। उसकी उम्र में यह छेड़छाड़ मुझे भी

अच्छी लगती थी परंतु जब से अध्यापक बना हूं, नैतिकता ने मुझे बांध दिया है। खुद कर नहीं सकता इसलिए दूसरों को करते देख गुस्सा आता है। इसलिए मैंने उस लड़के को टोका, "तुम्हें शर्म नहीं आती, इस लड़की को तंग करते हुए?"

युवक ने मुझे घूरकर देखा और फिर बड़े लापरवाह ढंग से कहा, "नहीं।"

मेरे लिए उत्तर अप्रत्याशित था। मैं असमंजस में पड़ गया। सोच रहा था कि वह या तो मुझसे माफी मांगेगा या फिर अपनी सफाई देगा। उसने न कुछ मांगा और न कुछ दिया। अपनी इज्जत बचाने के लिए मैंने प्रश्न कर दिया, "क्यों?"

"इस देश में साले बुजुर्गों को शर्म नहीं आ रही है। मैं तो अभी बच्चा हूं। ये पूरे देश के साथ छेड़छाड़कर रहे हैं, इन्हें तो कोई कुछ कहता नहीं, हमें शर्मिन्दा करने पर तुले हुए हैं। जो लोग पूरे देश के कपड़े उतार कर विदेशी बैंकों में रखते जा रहे हैं, उन्हें कोई नहीं टोकता। बरसों से देश की दलाली खा रहे हैं। थू...!"

मैंने अपना मुंह साफ किया और गर्दन झुका ली। उसने गर्व से लड़की को छेड़ा और गर्दन उठा ली!

हमारे मोहल्ले में दो सम्माननीय व्यक्ति है-एक की लड़की भाग गयी है और दूसरा शराब पीकर अपनी पत्नी को पीटता है। दोनों से उलझने का कोई साहस नहीं करता। रोज मोहल्ले की नींद खराब होती है, अमन-चैन में खलल पड़ता है। एक दिन मैं साहस कर बैठा। मैंने उनसे कहा, "आपको शर्म नहीं आती?"

"किस बात की?" उन्होंने एक घूंट पिया और मुसकराये।

"आप रोज रात को शराब पीकर मोहल्ले में अंट-शंट बकते हैं, अपनी पत्नी को पीटते हैं, मोहल्ले की शांति भंग करते हैं।" मेरे स्वर में आक्रोश था।

"अरे पीते हैं तो अपने पैसे की पीते हैं, किसी के बाप के पैसे की नहीं पीते। मोहल्ला मेरे रुपये को देखकर जलता क्यों है?" उनका स्वर ऊंचा हो रहा था, लग रहा था जैसे वह मुझसे लड़ रहे हों, "कल से तो मैं मोहल्ले के बीच में बोतल रखकर पीऊंगा, देखता हूं, किसमें हिम्मत है मुझे कुछ कह जाये। बीवी मेरी है, सारा मोहल्ला सुन ले, बीवी मेरी है, मेरी। उसे मैं मारता हूं तो मोहल्ले को क्यों दर्द होता है - अबे, क्या तुम उसके यार हो? तुम लोगों